Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 9

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन

SIERRA INNOVATIONS

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान और लोक प्रशासन

क्रमांक संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ सं
	यूनिट 1 (मुख्य) दार्शनिक/विचारक, समाज सुधारक	
1.	**नैतिक विचारक, दार्शनिक और समाज सुधारक** • सोकरेट • प्लेटो • अरस्तू • महावीर • बुद्ध • आचार्य शंकर: • चार्वाक • गुरुनानाक • कबीर • रवींद्र नाथ टैगोर • राजा राम मोहन राय • सावित्रीबाई फुले • स्वामी दयानंद सरस्वती • स्वामी विवेकानंद • महर्षि अरविंद • सर्वपल्ली राधाकृष्णन	**1**
	यूनिट 2 (मेन्स) मनोवृत्ति, कोशल और भावनात्मक बुद्धि	
2.	**मनोवृत्ति** • अवयव • मनोवृत्ति की संरचना • कार्य • नैतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण • सामाजिक प्रभाव • प्रोत्साहन • पूर्वाग्रह और भेदभाव	**26**
3.	**कौशल** • सिविल सेवाओं के लिए योग्यता और मूलभूत मूल्य • अखंडता • निष्पक्षता • गैर-पक्षपात • निष्पक्षतावाद • सहानुभूति • सहनशीलता • करुणा	**35**

4.	**भावनात्मक बुद्धि** ● भावना ● भावनात्मक बुद्धि (ईआई) ● इंटेलिजेंस कोशिएंट (IQ)	**44**
इकाई 3 लोक प्रशासन में मानवीय आवश्यकताएं और प्रेरणा तथा नैतिकता एवं मूल्य		
5.	**मानव की जरूरतें और प्रेरणा** ● वर्गीकरण ● प्रेरणा के प्रकार ● उद्देश्यों का वर्गीकरण ● प्रेरणा और आवश्यकताओं के सिद्धांत	**54**
6.	**शासन में नैतिक तत्व** ● अखंडता ● नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में विवेक। ● प्रशासन में नैतिकता ● लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएं ● नैतिक मार्गदर्शन ● नैतिक शासन एवं जवाबदेही ● शासन में नैतिकता एवं नैतिक मूल्य	**58**
भ्रष्टाचार		
7.	**भ्रष्टाचार** ● भ्रष्टाचार के प्रकार ,कारण एवं प्रभाव। ● भ्रष्टाचार को कम करने के उपाय। ● लोकपाल और लोकायुक्त। ● भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान	**72**
केस स्टडी		
8.	**केस स्टडी दृष्टिकोण** ● कुछ महत्वपूर्ण रणनीतियाँ: ● विभिन्न तत्व ● विभिन्न दृष्टिकोण ● केस स्टडीज	**77**

1 अध्याय

(मुख्य) दार्शवनक/विचारक, समाज सुधारक

पश्चिमी विचारक

सुकरात

- एथेंस का एक यूनानी दार्शनिक जो पश्चिमी दर्शन के संस्थापकों में से एक है, और विचार की पश्चिमी नैतिक परंपरा का पहला नैतिक दार्शनिक है।

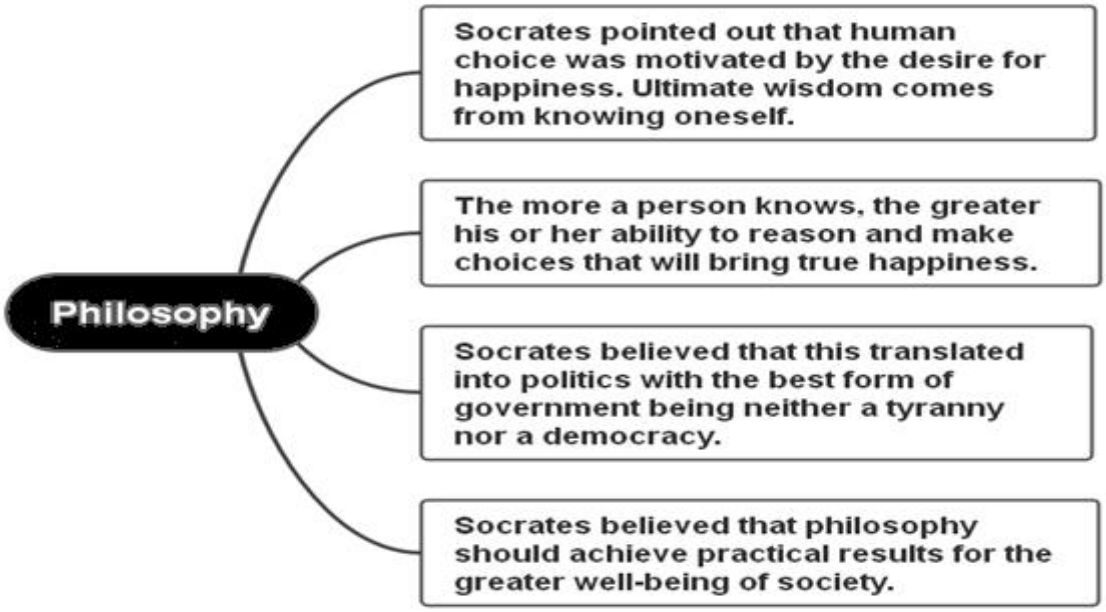

- पेरिकल्स एथेंस के स्वर्ण युग के दौरान पले-बढ़े, एक सैनिक के रूप में विशिष्ट सेवा की, लेकिन हर चीज और हर किसी के प्रश्नकर्ता के रूप में जाना जाने लगा।
- उनकी शिक्षण शैली सुकरातस पद्धति में ज्ञान देना शामिल नहीं था, बल्कि प्रश्न को स्पष्ट करने के बाद प्रश्न पूछना था , जब तक उनके छात्र अपनी समझ पर नहीं पहुँच।
- उन्होंने खुद कुछ नहीं लिखा, इसलिए उनके बारे में जो कुछ भी जाना जाता है, वह कुछ समकालीनों और अनुयायियों, विशेष रूप से उनके छात्र प्लेटो के लेखन के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।
- एथेंस के युवाओं को भ्रष्ट करने का आरोप लगाया और मौत की सजा सुनाई।
- पलायन न करने का विकल्प चुनते हुए, उसने जल्लाद के जहरीले हेमलॉक के प्याले को पीने से पहले अपने अंतिम दिनों को अपने दोस्तों की संगति में बिताया।

सुकरात के नैतिक विचार

सदाचार नैतिकता

- मुख्य रूप से आत्म-सुधार के माध्यम से एक व्यक्ति को एक बेहतर व्यक्ति बनने में मदद करने से संबंधित है।
- हमें यह समझने की आवश्यकता है कि खुद को बेहतर लोगों में कैसे बदला जाए।
- इसका मतलब है कि हमें यह समझना होगा कि नैतिकता क्या है, नैतिक होने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए और वास्तव में नैतिक रूप से कैसे व्यवहार किया जाए।
- उन्होंने सोचा कि ज्ञान सदाचार है, और सदाचार से सुख मिलता है।
- यह सोचना समझ में आता है कि नैतिक लोग जानते हैं कि नैतिकता क्या है। यदि आप सही गलत जानते हैं, तो आप वह करने में सक्षम हो सकते हैं जो आप जानते हैं कि सही है।

- यह संदेह करना भी समझ में आता है कि सही और गलत के बारे में हमारा विश्वास हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है।
- सदाचार सदा सुख की ओर ले जाता है। अपराधी ऐसे अपराध करते हैं जो दूसरों को चोट पहुँचाते हैं। हालाँकि, दूसरों की मदद करना हमें खुश कर सकता है, इसलिए सही काम करना अपराध करने से ज्यादा संतोषजनक हो सकता है।
- प्रस्तावित "गुणों की एकता" - यदि आपके पास एक गुण है, तो आपके पास सब कुछ है। साहस के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, ज्ञान के लिए संयम की आवश्यकता होती है (जैसे उचित खाने की आदतें), और संयम के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
- उन्होंने तर्क दिया कि सभी गुण एक प्रकार के ज्ञान हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि एक प्रकार के ज्ञान के लिए सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होगी।

नैतिक बौद्धिकता

- **अच्छे जीवन के लिए कारण आवश्यक है**
  - सही काम करने से ही सच्चा सुख मिलता है।
  - जब आपकी सच्ची उपयोगिता की सेवा की जाती है (अपनी आत्मा को प्रवृत्त करके), तो आप सुख प्राप्त कर रहे हैं। आत्मा पर दीर्घकालिक प्रभाव के संदर्भ में ही खुशी स्पष्ट होती है।
  - मानव क्रिया का उद्देश्य प्रकृति में उद्देश्य के अनुसार अच्छाई की ओर होता है।
- **कोई भी बुराई या अज्ञानता में कार्य करने का चुनाव नहीं करता है**
  - कोई भी जानबूझकर खुद को नुकसान नहीं पहुँचाएगा।
  - जब हमें नुकसान होता है, हालाँकि हमने सोचा था कि हम अच्छे की तलाश कर रहे हैं, ऐसे मामले में अच्छा नहीं मिलता है, क्योंकि हमारे पास ज्ञान की कमी है कि अच्छे को कैसे प्राप्त किया जाए।
- **अन्यायपूर्ण जीवन पर न्यायपूर्ण जीवन के पक्ष में 3 तर्क**
  - धर्मी मनुष्य बुद्धिमान और भला होता है, और अन्यायी मनुष्य अज्ञानी और बुरा होता है
  - अन्याय आंतरिक वैमनस्य पैदा करता है जो प्रभावी कार्यों को रोकता है
  - सद्गुण किसी चीज के कार्य में उत्कृष्टता है और न्यायी व्यक्ति अन्यायी व्यक्ति की तुलना में अधिक सुखी जीवन जीता है, क्योंकि वह मानव आत्मा के विभिन्न कार्यों को अच्छी तरह से करता है।

प्लेटो

- 427/428 ईसा पूर्व में जन्मे और एथेंस के एक यूनानी राज्य के शहर में एक कुलीन परिवार से सम्बंधित थे।
- सुकरात का शिष्य जो ग्रीस के प्रमुख दार्शनिकों में से एक था।
- अपनी 'अकादमी' की स्थापना की, जो 'अकादेमोस' नामक एक प्रसिद्ध एथेनियन नायक के नाम से आती है। यहाँ प्लेटो ने राजनीतिक दर्शन पढ़ाया जिसमें राजनीति, नैतिकता, गणित और समाजशास्त्र शामिल थे।
- प्लेटो की तीन सबसे महत्वपूर्ण कृतियाँ 'द रिपब्लिक', 'द स्टेट्समैन' और 'द लॉज़' हैं। इन कृतियों के अलावा उन्होंने और भी कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं।

4 कार्डिनल गुण

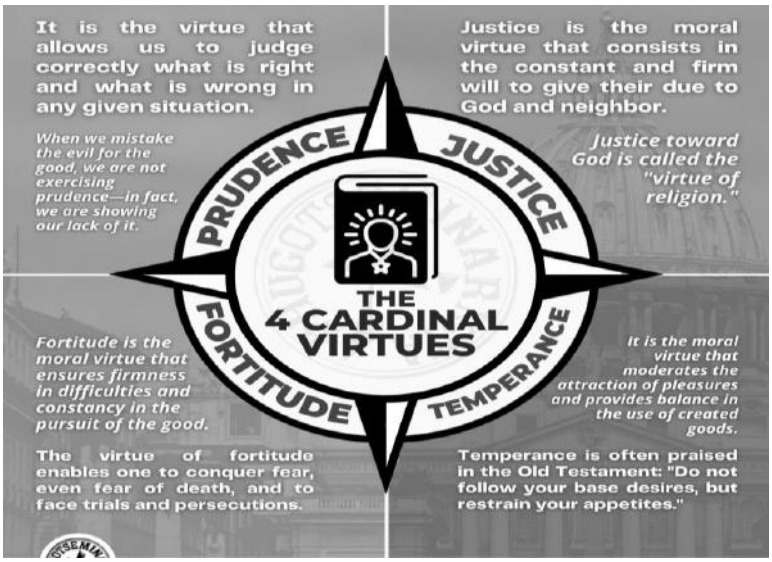

प्लेटो के विचार

- **आदर्श राज्य-**
  - शासक वर्ग, सैन्य वर्ग और आर्थिक वर्ग नामक 3 वर्गों से बना है।
- **आदर्श न्याय-**
  - न्याय एक ही इंसान और राज्य दोनों में रहता था।
  - प्रत्येक मनुष्य तीन गुणों से संपन्न है -

    - कारण - एक व्यक्ति के सिर में रहता है।
    - आत्मा - व्यक्ति के हृदय में निवास करती है।
    - भूख - व्यक्ति के पेट में रहती है।
- **शिक्षा**
  - बचपन से वयस्कता तक छात्रों की उम्र के अनुकूल विभिन्न चरणों के आधार पर।
  - शिक्षा के उच्च स्तर के रूप में उन्मूलन की युक्तियुक्त विधि मनुष्य द्वारा प्राप्त की जाती है।
  - उनकी आत्मा के तीन भागों अर्थात् कारण, आत्मा और भूख के अनुपात पर निर्भर करता है।
- **लोकतंत्र**
  - अपने काम 'द रिपब्लिक' में, उन्होंने व्यावहारिक रूप से लोकतंत्र की निंदा की।
  - इस विचार को विकसित किया कि सभी शासन करने के योग्य नहीं हैं और केवल दार्शनिकों को ही शासन करना चाहिए जिन्हें इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया था।
- **बच्चे**
  - बच्चे राष्ट्रीय संपत्ति हैं और इस तरह राज्य की ओर से यह अनिवार्य था कि उन्हें उनके दृष्टिकोण के अनुसार लाया जाए।
- **गुण**
  - 3 प्रमुख भाग- बुद्धि, भावनाएँ और भूख।
  - तर्क करने और सीखने की बुद्धि,
  - भावनाओं को प्रेरित करने के लिए,
  - यह जानने के लिए भूख लगती है कि हमें कब किसी चीज़ (भोजन, पानी, आदि) की आवश्यकता होती है।

अरस्तु

- प्लेटो के छात्र
- एथेंस में प्लेटो की अकादमी में अध्ययन किया।

- राजनीतिक दर्शन के विश्वकोश के रूप में माना जाता है।
- प्लेटो की मृत्यु के बाद अरस्तु ने अपना शिक्षण कार्यक्रम शुरू किया।
- सिकंदर उनके शिष्यों में से एक है।
- प्लेटो के विपरीत जिन्होंने "आदर्श राज्य" का प्रस्ताव रखा, लेकिन अरस्तु ने "सर्वश्रेष्ठ व्यावहारिक राज्य" का प्रस्ताव रखा।
- ब्रह्मांड की टेलियोलॉजिकल व्याख्या दी।

अरस्तु के विचार

खुशी	• यह परम अच्छा है, क्योंकि अन्य सभी सामान मध्यवर्ती हैं। • खुशी का उच्चतम रूप बौद्धिक चिंतन का जीवन है। • सच्चा सुख भौतिक चीजों में नहीं है, बल्कि किसी के वास्तविक स्वरूप को समझने और अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त करने में है। • संक्षेप में, खुशी स्वयं पर, न कि बाहरी दुनिया पर निर्भर करती है।
पुण्य नैतिकता	सद्गुण दो चरम सीमाओं के बीच एक सुनहरा माध्यम है। • दो चरम सीमाओं का मतलब। • गोल्डन मीन की पहचान किसी व्यक्ति के चरित्र या गुण पर आधारित होती है, जो आदतन क्रिया से जुड़ी होती है। • सदाचार नैतिकता की कुंजी यह है कि नैतिक क्रिया व्यक्ति पर आधारित होती है। o वाइस ऑफ मिनिमल - यह विश्वास रखना कि भगवान सब कुछ संभाल लेंगे। o अति का दोष - स्वभाव से लालची हो। o गुण कैसे प्राप्त करें- (i) आदत (ii) खुशी (iii) बुद्धि, ज्ञान, विवेक आदि जैसे बौद्धिक गुण (iv) नैतिक गुण जैसे साहस, संयम, स्वतंत्रता आदि
राज्य और नागरिक	• राज्य का प्रमुख कार्य अच्छे जीवन को बढ़ावा देना और लोगों के मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करना है। • राज्य को भी इस तरह से कार्य करना चाहिए कि व्यक्तियों की अच्छी आदतें अच्छे कार्यों में परिवर्तित हो जाएँ और अच्छे, सुखी और सम्मानजनक जीवन को बढ़ावा दें।
परिवार	• एक प्राकृतिक संस्था और वास्तव में यह राज्य से पहले अस्तित्व में थी।

	• यह स्वाभाविक है क्योंकि व्यक्ति अपने जन्म से ही सदस्य बन जाते हैं। यह नैतिक जीवन का प्रारंभिक बिंदु और राज्य का केंद्र बिंदु है।
गुलामी	• दास एक स्वामी की चेतन संपत्ति में से पहला है अर्थात् दास उस घर की सभी जीवित संपत्ति में प्रथम है जिसका स्वमी वह है। • दास उत्पादन का नहीं, कर्म का साधन है, क्योंकि जैसे ही वह उत्पादक कार्य करना शुरू करता है, वह दास के रूप में अपना चरित्र खो देता है और गुणी हो जाता है।

काल मार्क्स

- उन चंद लोगों में से एक जिन्होंने दुनिया को देखने का हमारा नजरिया बदल दिया।
- मार्क्स के लिए किसी भी सिद्धांत को न केवल आस-पास की दुनिया को समझने का समर्थन करना चाहिए, बल्कि दुनिया को बदलने की दिशा में एक कदम आगे होना चाहिए।
- उनकी रचनाएँ - कम्युनिष्ठ घोषणापत्र, इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा और दास पूँजी, विभिन्न आर्थिक विचारों की परिणति हैं, जो मजदूर वर्ग की आत्म-मुक्ति के एकल लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं।
- उन्होंने पूँजीवाद, समाजवाद और सांप्रदायिकता को छुआ।
- तर्क है कि उस वर्ग संघर्ष की प्रकृति उत्पादन की प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है।
- उन्होंने कहा कि "अब तक के सभी मौजूदा समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है"।

मार्क्स का निष्कर्ष-

- वर्ग (सर्वहारा वर्ग और पूँजीपति वर्ग) किसी समाज की स्थायी विशेषता नहीं हैं
- वर्ग संघर्ष 'सर्वहारा वर्ग की तानाशाही' की ओर ले जाता है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिक उत्पादन पर नियंत्रण कर लेते हैं
- 'सर्वहारा वर्ग की तानाशाही' वर्गहीन समाज की ओर ले जाएगी और समाज से मतभेद गायब होने के साथ, राज्य अंततः दूर हो जाएगा।

गाँधी और मार्क्सवाद

विषय	गाँधी जी	मार्क्स
राज्य की अवधारणा	• राज्यविहीन और वर्गविहीन समाज • अर्थ - अहिंसा	• राज्यविहीन समाज • मतलब - वर्ग संघर्ष और हिंसा
पूँजीवाद	आर्थिक विकेंद्रीकरण और सहकारी समितियों और कुटीर उद्योगों द्वारा पूँजीवादी ट्रस्टी बनाकर पूँजीवाद को हटाना चाहते थे।	वह क्रांति के माध्यम से पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना चाहते थे।
लोकतंत्र	महसूस किया कि पश्चिमी लोकतंत्र अधूरा था इसलिए वह पंचायतों को अधिक अधिकार देकर शक्तियों का विकेंद्रीकरण करना चाहता था।	मजदूर वर्ग की तानाशाही
अधिकार और स्वतंत्रता	व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों के कट्टर समर्थक।	व्यक्तिगत अधिकारों की तुलना में सामूहिक अधिकार।

धर्म	ईश्वर में विश्वास किया और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत किया।	भौतिकवादी जीवन में विश्वास और ईश्वर में कोई आस्था नहीं।
अर्थव्यवस्था और उद्योग	• स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की जरूरत है। • "बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं, बल्कि जनता द्वारा उत्पादन"।	औद्योगिक अर्थव्यवस्था और मजदूर वर्ग का प्रभुत्व।

भारतीय विचारक

कौटिल्य/चाणक्य

- चंद्रगुप्त मौर्य के मुख्यमंत्री थे, जिन्होंने एक उत्तर भारतीय राज्य पर शासन किया था।
- अर्थशास्त्र के लेखक ने अपनी पुस्तक 300BCE में लिखी थी, वह पुस्तक राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर अधिक केंद्रित थी।
- अर्थशास्त्र, जिसका शाब्दिक अर्थ है धन और शास्त्र का ज्ञान अर्थात् "धन का विज्ञान"।
- राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पहला साहित्यिक स्रोत जहाँ उन्होंने सुशासन की अवधारणा को समझाया।
- कौटिल्य के विचार -
    - राजा - प्रजा के सुख में उसका सुख है, उनके कल्याण में उसका कल्याण है। किसी भी चीज को तभी अच्छा माना जाता है जब वह उसकी प्रजा के लिए अच्छा हो और वह उसे अच्छा न समझे जिससे उसकी प्रजा को नुकसान हो
    - राजा हमेशा अपने नागरिकों के लिए सुलभ और उपलब्ध रहता है
    - उन्होंने राजा और उनकी मंत्रिपरिषद् की आचार संहिता पर जोर दिया। उनके पास लोगों की संपत्ति नहीं होनी चाहिए
    - प्रगतिशील कराधान
    - कल्याणकारी राज्य के पक्ष में
    - राजा के व्यवहार संबंधी पहलू

चाणक्य नीति

साम नीति	प्रशासन में नैतिक मूल्यों, आचार संहिता, आचार संहिता आदि के बारे में सार्वजनिक और सार्वजनिक अधिकारियों को पढ़ाना और जगाना।
दाम नीति	मेहनती अधिकारियों को प्रोत्साहित करना, ईमानदार लोगों को पहचानना और बेहतर वेतन संरचना, बेहतर काम करने की स्थिति और बेहतर सेवा शर्तें। सार्वजनिक और सार्वजनिक अधिकारियों दोनों के लिए एक शिकायत निवारण तंत्र होना चाहिए।
दंड नीति	भ्रष्ट गतिविधियों में लिप्त लोगों को सजा मिलनी चाहिए। दंड निवारक के रूप में कार्य करता है और अधिकारियों में भय पैदा करता है जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार उच्च जोखिम वाली गतिविधि बन जाता है, लेकिन भारत में भ्रष्टाचार एक कम जोखिम वाली गतिविधि और उच्च लाभ वाली गतिविधि है।
मेध नीति	नियम विरुद्ध जाने, घूस लेने, बेहिसाब धन आदि लेने वालों पर निगरानी एवं आमसूचना एवं जासूसी प्रणाली की सूचना दी जाए।

वर्धमान महावीर

- जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर।

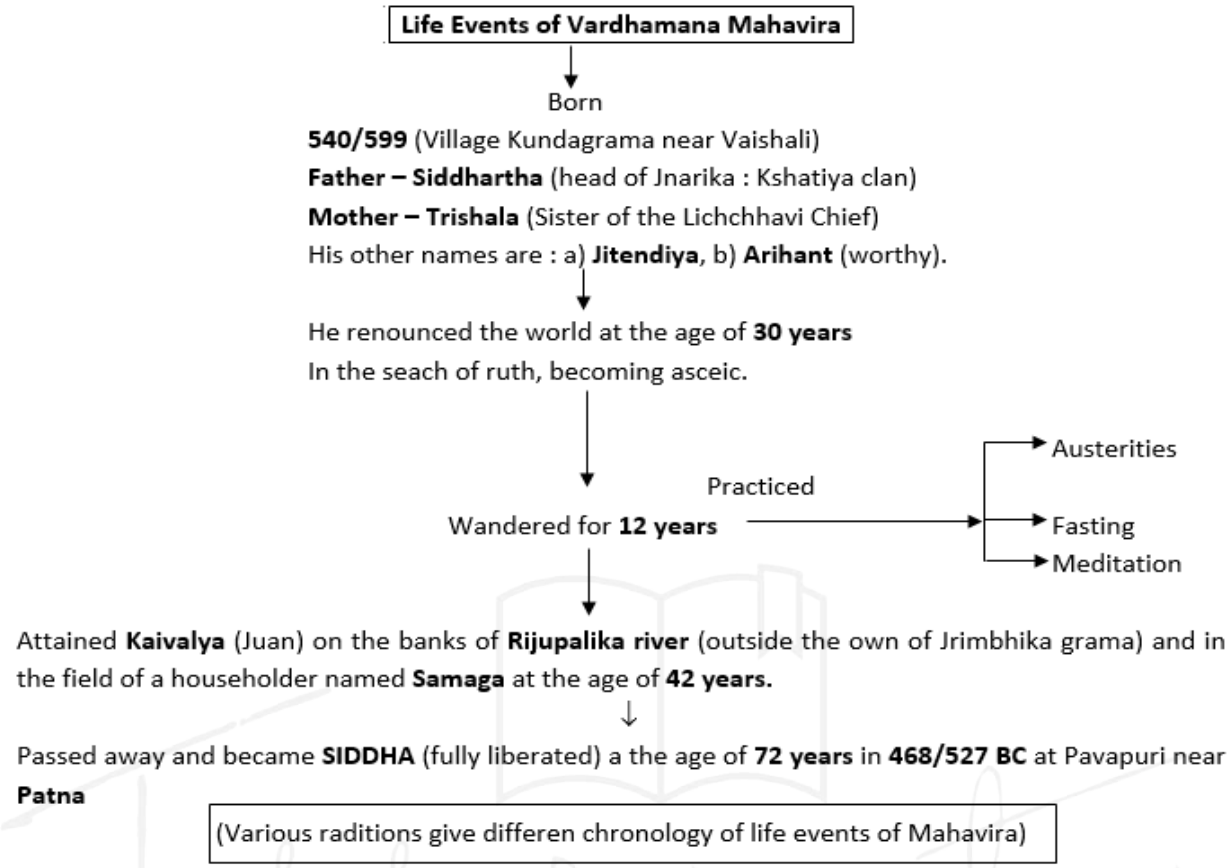

- विवाहित - यशोधरा
- पुत्री - प्रियदर्शिनी (जिसका विवाह जमाली से हुआ था)।
- जमाली - महावीर के प्रथम शिष्य
- सत्य की खोज में तीस वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन छोड़ दिया।
- 12 साल तक भटकता रहा।
- एक गाँव में एक दिन से अधिक और एक कस्बे में पाँच दिन से अधिक नहीं रहा।
- नालंदा की यात्रा के दौरान गोसाल मक्खलिपुत्त नामक एक संत से मिले। गोसाल उनके ज्ञान से प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए और छह साल तक उनके साथ रहे।
    - बाद में कायाकल्प के सिद्धांत पर महावीर के साथ मतभेद हो गए और उन्हें "आजीविका" नामक एक नई धार्मिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए महावीर की संगति को दिया।
- 42 वर्ष की आयु में, वैशाख के दसवें दिन, जूम्भिकग्राम के समीप, ऋजुपालिका नदी के किनारे एक साल के पेड़ के नीचे ध्यान करते हुए पूर्ण ज्ञान या " कैवल्य " प्राप्त किया।
- पहला उपदेश - राजगृह के निकट विपुलाचल पहाड़ी पर ।
- चंपा, वैशाली, राजगृह, मिथिला और श्रावस्ती में प्रचार किया।
- शाही संरक्षण प्राप्त किया।
- मगध के राजा बिंबिसार और अजातशत्रु के पास नियमित रूप से जाते थे।
- अवंति के राजा चंद्र प्रद्योत ने जैन धर्म ग्रहण किया।
- मृत्यु- पावापुरी (72 वर्ष की आयु में 527 ई.पू. (लगभग 468 ई.पू.)।
- गौतम बुद्ध के समकालीन।
- पार्श्वनाथ की शिक्षाओं को जैन धर्म का आधार माना।

महावीर के उपदेश

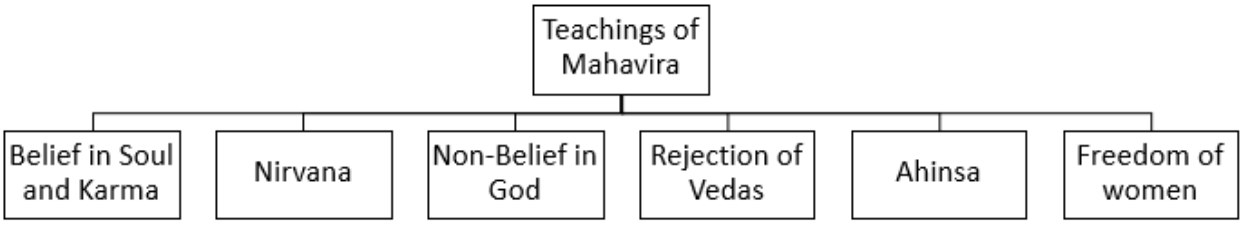

- **आत्मा और कर्म में विश्वास**
  - कहा कि आत्मा कर्म के कारण बंधन की स्थिति में है।
  - विश्वास था कि कर्मशक्ति के विघटन से ही आत्मा की मुक्ति हो सकती है।
  - कर्मों के क्षय से आत्मा के आंतरिक मूल्य को उजागर किया जा सकता है और आत्मा पूर्ण प्रकाश में चमकती है।
  - जब आत्मा अनंत महानता प्राप्त कर लेती है तो वह अनंत ज्ञान, शक्ति और आनंद के साथ परमात्मा, शुद्ध आत्मा बन जाती है।
- **निर्वाण**
  - महावीर के अनुसार जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है।
  - बुरे कर्मों से बचने, सभी प्रकार के नए कर्मों को रोकने और मौजूदा कर्मों को नष्ट करने पर जोर दिया।
  - निर्वाण 5 व्रतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है - गैर-चोट (अहिंसा), सच बोलना (सत्य), गैर-चोरी (अस्थेय), गैर-व्यभिचार (ब्रह्मचर्य) और गैर-कब्जे (अपरिग्रह)।
  - सही आचरण, सही विश्वास और सही ज्ञान के सिद्धांतों पर भी जोर दिया।
- **ईश्वर में अविश्वास**
  - वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था और न ही यह मानता था कि उसने दुनिया की रचना की है या उस पर कोई व्यक्तिगत नियंत्रण नहीं रखता है।
  - दुनिया कभी खत्म नहीं होती यह बस अपना रूप बदलती है।
  - इस सिद्धांत पर सांख्य दर्शन का प्रभाव।
  - तपस्या और आत्मग्लानि का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य अपने दुखों से छुटकारा पा सकता है।
- **वेदों की अस्वीकृति**
  - वेदों के सिद्धांत को खारिज कर दिया और ब्राह्मणों के यज्ञ अनुष्ठानों को कोई महत्व नहीं दिया।
- **अहिंसा**
  - सभी प्राणियों, जानवरों, पौधों, पत्थरों, चट्टानों आदि में जीवन है और किसी को भी वाणी, कर्म या कर्म से दूसरे को कोई नुकसान नहीं करना चाहिए।
  - यद्यपि यह सिद्धांत पूरी तरह से नया नहीं था, इसका श्रेय जैनियों को जाता है कि उन्होंने इसे लोकप्रिय बनाया और इस तरह विभिन्न प्रकार के बलिदानों की प्रथा को समाप्त कर दिया।
- **महिलाओं को आजादी**
  - महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्षधर थे और मानते थे कि उन्हें भी निर्वाण प्राप्त करने का अधिकार है।
  - अपने पूर्ववर्ती पार्श्वनाथ के उदाहरण का अनुसरण किया।
  - जैन संघ में महिलाओं को अनुमति दी गई और कई महिलाएँ भिक्षुणी और श्राविक बन गईं।

जैन धर्म की शिक्षा

1. पंच महाव्रत (पाँच सिद्धांत)

अहिंसा	• जैन धर्म का कार्डिनल सिद्धांत। • सर्वोच्च धर्म (अहिंसा परमो धर्म)। • जैन धर्म के अनुसार, सभी जीवित प्राणी, उनके आकार, आकार या विभिन्न आध्यात्मिक विकास के बावजूद समान हैं। • किसी भी जीवित प्राणी को जानवरों, कीड़ों और पौधों सहित किसी अन्य जीवित प्राणी को नुकसान पहुँचाने, चोट पहुँचाने या मारने का अधिकार नहीं है। • प्रत्येक जीवित प्राणी को अस्तित्व का अधिकार है और प्रत्येक जीवित प्राणी के साथ पूर्ण सद्भाव और शांति से रहना आवश्यक है। • नकारात्मक गुण नहीं। • सार्वभौमिक प्रेम और करुणा के सकारात्मक गुण पर आधारित। • जो इस आदर्श से प्रेरित होता है, वह दूसरों की पीड़ा के प्रति उदासीन नहीं हो सकता।
चोरी न करना (आचार्य या अस्तेय)	• दूसरे की संपत्ति उसकी सहमति के बिना या अन्यायपूर्ण या अनैतिक तरीकों से लेना। • ऐसी कोई भी वस्तु नहीं लेनी चाहिए जो उसकी न हो। • किसी को ऐसी चीज़ लेने का अधिकार नहीं है, जो झूठ बोल रही हो, लावारिस हो। • इस व्रत का कड़ाई से पालन करना चाहिए और किसी फालतू वस्तु को भी नहीं छूना चाहिए जो उसकी नहीं है। • भिक्षा, सहायता या सहायता स्वीकार करते समय जितना कम हो उतना अधिक नहीं लेना चाहिए। • अपनी आवश्यकता से अधिक लेना भी जैन धर्म में चोरी माना गया है।
सत्य	• क्रोध, लोभ, भय और मजाक - असत्य के प्रजनन का आधार। • जो लोभ, भय, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और तुच्छता पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, वही सत्य बोल सकते हैं। • असत्य से न केवल बचना चाहिए, बल्कि हमेशा सत्य बोलना चाहिए, जो हितकर और सुखद हो। • यदि सत्य किसी भी जीव को पीड़ा, चोट, क्रोध या मृत्यु देता है तो उसे चुप रहना चाहिए। • सत्य को वाणी, मन और कर्म में देखना है। • किसी को असत्य नहीं बोलना चाहिए, दूसरों को ऐसा करने के लिए नहीं कहना चाहिए, या ऐसी गतिविधियों को स्वीकार नहीं करना चाहिए।
गैर-कब्जा (अपरिग्रह)	• एक व्यक्ति के पास जितना अधिक सांसारिक धन होता है, उतना ही अधिक पाप करने की संभावना अधिक होती है, और वह लंबे समय में दुखी हो सकता है। • सांसारिक धन आसक्ति उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरुप लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ, अहंकार, घृणा, हिंसा आदि निरंतर उत्पन्न होते रहेंगे। • जो आध्यात्मिक मुक्ति चाहता है उसे सभी आसक्तियों से सभी पाँचों इंद्रियों की सुखद वस्तुओं को वापस लेना चाहिए। • भिक्षु, इस व्रत का पालन सभी चीजों से मोह त्याग कर करते हैं। जैसे - भौतिक चीजें- धन, संपत्ति, अनाज, घर, किताबें, कपड़े, आदि। • संबंध- पिता, माता, पति या पत्नी, बच्चे, मित्र, शत्रु, अन्य साधु, शिष्य, आदि। • पाँच इंद्रियों का आनंद- स्पर्श, स्वाद, गंध, दृष्टि और श्रवण • भावनाएँ- किसी भी वस्तु के प्रति सुख और दुख की भावना

	○ संगति- संगीत और शोर, अच्छी और बुरी गंध, स्पर्श के लिए नरम और कठोर वस्तुएँ, सुंदर और गंदी जगहें, आदि।
ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य)	• ब्रह्मचर्य - कामुक सुख से पूर्ण संयम और सभी पाँचों sइंद्रियों का आनंद। • कामुकता को नियंत्रित करने के व्रत का सूक्ष्म रूप में पालन करना बहुत कठिन है। • कोई शारीरिक भोग से परहेज कर सकता है, लेकिन फिर भी कामुकता के सुखों के बारे में सोच सकता है, जो जैन धर्म में निषिद्ध है। • भिक्षुओं को इस व्रत का कड़ाई से और पूरी तरह से पालन करना आवश्यक है। • गृहस्थों को अपने स्वयं के पति या पत्नी के अलावा कोई शारीरिक संबंध नहीं होना चाहिए- वह भी सीमित प्रकृति का। • प्रथम चार उपदेश - **23**वें तीर्थंकर, पार्श्वनाथ। • अंतिम - महावीर।

2. त्रिरत्न (तीन रत्न)

(i) अनेकांतवाद

- अर्थ "गैर-निरपेक्षता।
- सापेक्षवाद और बहुलवाद की स्वीकृति को प्रोत्साहित करता है।
- सत्य और वास्तविकता को अलग-अलग दृष्टिकोण से अलग-अलग माना जाता है, और कोई एक दृष्टिकोण पूर्ण सत्य नहीं है।
- वस्तुओं में अस्तित्व और गुण के अनंत तरीके होते हैं इसलिए उन्हें सीमित मानवीय धारणा द्वारा सभी पहलुओं और अभिव्यक्तियों में पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है।
- केवल सर्वज्ञानी प्राणी ही सभी पहलुओं और अभिव्यक्तियों में वस्तुओं को समझ सकते हैं, अन्य केवल आंशिक ज्ञान के लिए सक्षम हैं।

(ii) स्यादवाद (सशर्त भविष्यवाणी का सिद्धांत)

- सभी निर्णय सशर्त होते हैं, केवल कुछ शर्तों, परिस्थितियों या इंद्रियों में अच्छे होते हैं, जिसे शब्द सियात (संस्कृत- "हो सकता है") द्वारा व्यक्त किया जाता है।
- किसी वस्तु को देखने के तरीके (जिसे नया कहा जाता है) संख्या में अनंत हैं।
- जैनियों का मानना है कि केवल एक नय दृष्टिकोण से अनुभव की व्याख्या करना, दूसरों के बहिष्कार के लिए, एक हाथी को महसूस करने वाले सात अंधे पुरुषों की तुलना में एक त्रुटि है, जिनमें से प्रत्येक ने निष्कर्ष निकाला कि वह जिस हिस्से को पकड़ रहा था वह हाथी का प्रतिनिधित्व करता था। सच्चा रूप।
- अनेकान्तवाद या "वास्तविकता की बहुपक्षीयता" - सभी कथनों को सत्य या गलत या दोनों के रूप में सत्य और असत्य नहीं माना जा सकता है और इस प्रकार, दृष्टिकोण के आधार पर अवर्णनीय माना जा सकता है।
- इन संभावनाओं के संयोजन को सात तार्किक विकल्पों में बताया जा सकता है जिन्हें सप्तभागी कहा जाता है।

(iii) क्रियाएँ- पाप (हिंसा, चोरी, झूठ, सहवास, क्रोध, जमाखोरी, अभिमान, माया, काम, लोभ, झगड़ा, द्वेष, झूठी शिकायत, दूसरों की निंदा करना, नियंत्रण न करना, पीठ थपथपाना, झूठी सोच और दोहरा नैतिक मानदंड) .

(iv) ब्रह्मांड की शाश्वतता में विश्वास- छह गैर-विनाशकारी तत्वों से बना ब्रह्मांड- जीव (आत्मा), अजिव (भौतिक पदार्थ), धर्म, अधर्म, काल और आकाश।

(v) ज्ञान के तीन स्रोत

- प्रत्यक्ष प्रमाण (**5** इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त धारणा)
- अनुमान (अनुमान, जिसके द्वारा हम सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं)
- शब्द प्रमाण (एक विशेषज्ञ का कथन- इस मामले में, तीर्थंकर)

(vi) अंतिम लक्ष्य- निर्वाण की प्राप्ति- जैन धर्म के त्रिरत्न का अभ्यास करके प्राप्त किया जा सकता है।

(vii) मनुष्य का भाग्य कर्म और उसके फल से बनता है।

(viii) जैन धर्म में निर्वाण

- कर्म के बंधन से अंतिम मुक्ति का संकेत देता है।
- प्रबुद्ध मनुष्य के शेष 'घटिया कर्मों' का विनाश।
- उसके सांसारिक अस्तित्व की समाप्ति के बाद।
- प्रबुद्ध मनुष्य की आत्मा की मुक्ति के रूप में वर्णित है।
- 'मोक्ष' की ओर ले जाता है और मानव अस्तित्व 'सिद्ध' की स्थिति में पहुँचजाता है।

गौतम बुद्ध

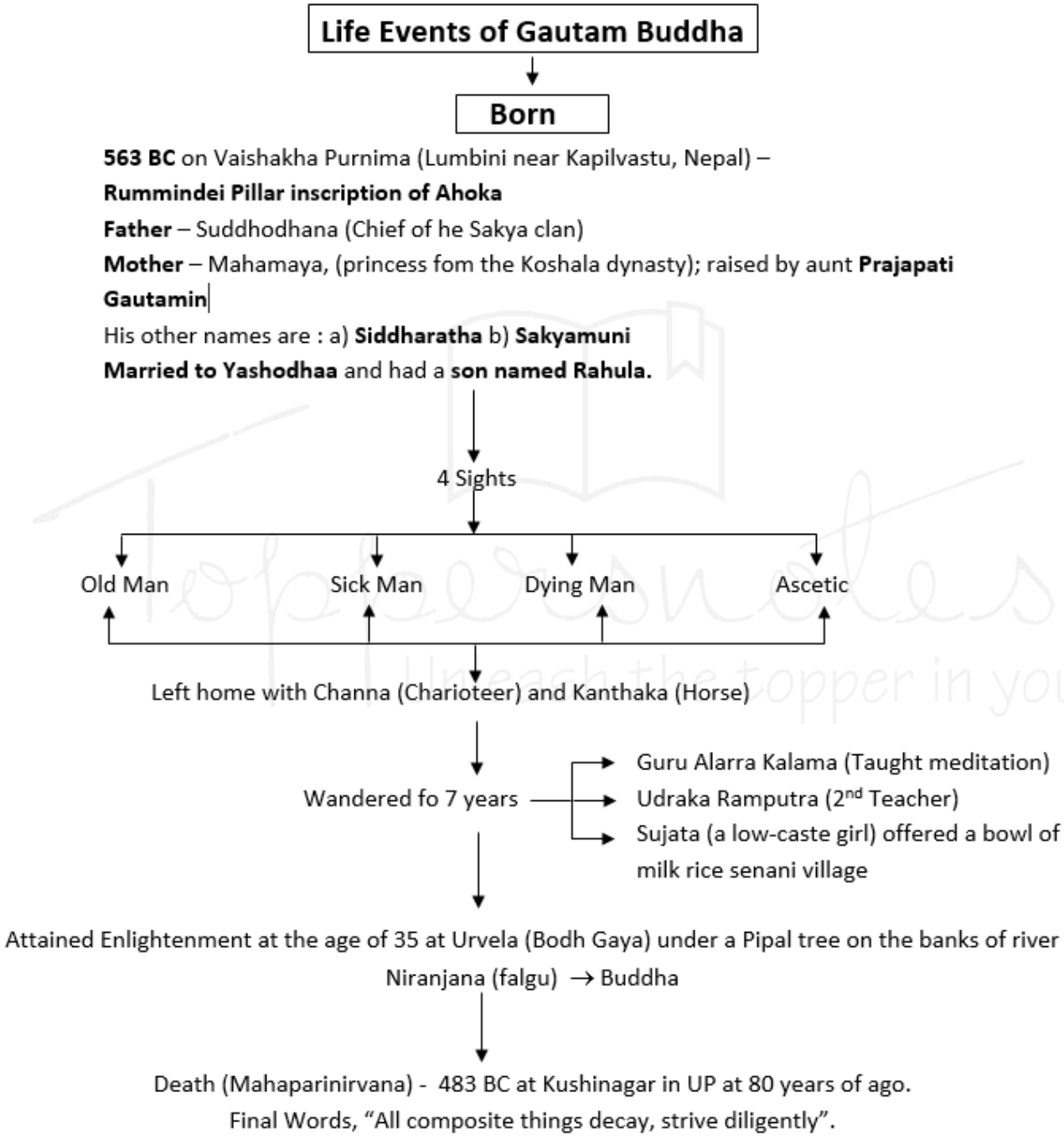

पाली भाषा में प्रचार किया।
प्रथम प्रवचन- बनारस के सारनाथ में डियर पार्क। घटना - धम्म चक्का पावत्ताना (धर्म का पहिया घुमाना)।
बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए कोसल, कपिलवस्तु, वैशाली और राजगृह की यात्रा की।
श्रावस्ती में अधिकतम उपदेश।

मृत्यु - **483** ईसा पूर्व - **80** वर्ष की आयु में उत्तर प्रदेश में कुशीनगर (घटना- महापरिनिर्वाण)।
अंतिम शब्द**,** "सभी मिश्रित चीजें क्षय होती हैं**,** लगन से प्रयास करें"।

बुद्ध के जीवन से जुड़ी महान घटनाएँ	प्रतीक
अवक्रांति (गर्भाधान या सभ्य)	सफेद हाथी
जाति (जन्म)	कमल और बैल
महाभिनिष्क्रमण (त्याग)	घोड़ा
निर्वाण/संबोधि (ज्ञानोदय)	बोधि वृक्ष
धर्मचक्र परिवर्तन (पहला उपदेश)	चक्र
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	स्तूप

बुद्धा की शिक्षा

1. पंचशीला (पाँच उपदेश या सामाजिक आचार संहिता)
   - हिंसा न करें
   - नशीले पदार्थों का सेवन न करें
   - झूठ मत बोलो
   - भ्रष्टाचार में लिप्त न हों
2. **चार आर्य सत्य**
   - चार आर्य सत्य, पाली छतरी-अरिया-सक्कनी, संस्कृत चटवारी-आर्य-सत्यनी, बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में से एक, बुद्ध द्वारा अपने पहले उपदेश में धर्म के संस्थापक बुद्ध द्वारा निर्धारित किया गया था, जो उन्होंने अपने ज्ञान के बाद दिया था।
   - बौद्ध धर्म के सभी स्कूलों द्वारा स्वीकार किया गया और व्यापक टिप्पणी का विषय रहा है।

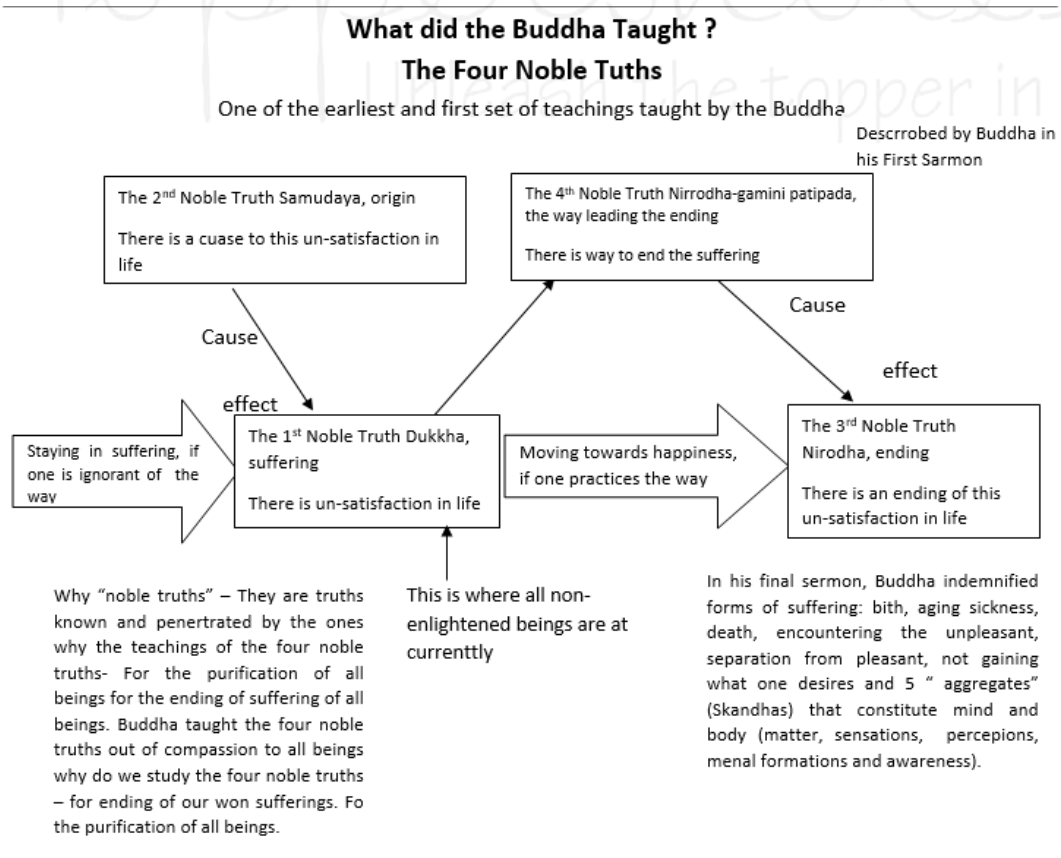

3. अष्टांगिका मार्ग (आठ गुना पथ)

- नेक मार्ग में निम्नलिखित आठ अच्छी चीजों की प्राप्ति शामिल है-

सही विचार (सम्मादिथि या सम्यग्दृष्टि)	• नैतिक सुधार के लिए पहला कदम सही विचारों या सत्य के ज्ञान का अधिग्रहण होना चाहिए। • 4 आर्य सत्यों के बारे में सही ज्ञान के रूप में परिभाषित। • नैतिक सुधार में मदद करता है**,** और निर्वाण की ओर ले जाता है।
सही संकल्प/दृढ़ संकल्प	• सत्य का ज्ञान तब तक बेकार होगा, जब तक कि कोई उनके प्रकाश में जीवन को सुधारने का संकल्प नहीं करता। • नैतिक आकांक्षी को सांसारिकता (संसार से सभी लगाव) को त्यागने के लिए कहा जाता है।
सम्यक वाक् (संवाद या सम्यग्वाक)	• झूट, निन्दा, निर्दयी वचनों और फालतू की बातों से दूर रहें।
सही आचरण (सम्मकमंता / सम्यक्कर्मंत)	• पंच-शिला, हत्या, चोरी, कामुकता, झूठ और नशा से दूर रहने के लिए 5 व्रत शामिल हैं।
सही आजीविका (सम्माजीव या सम्यग्जीव)	• व्यक्ति को ईमानदारी से अपनी आजीविका अर्जित करनी चाहिए। • अर्जित करने के लिए वर्जित साधनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए और अच्छे निश्चय के साथ संगति में काम करना चाहिए।
सही प्रयास (सम्मवायम या सम्यग्व्ययम)	• कोई व्यक्ति तब तक निरंतर प्रगति नहीं कर सकता जब तक कि वह पुराने बुरे विचारों को जड़ से उखाड़ फेंकने और बुरे विचारों को नए सिरे से उत्पन्न होने से रोकने के लिए निरंतर प्रयास नहीं करता है। • मन को अच्छे विचारों से भरने का निरंतर प्रयास करना चाहिए और ऐसे विचारों को मन में बनाए रखना चाहिए।
सही दिमागीपन (संमासती या सम्यक्स्मृति)	• संवेदनाओं या भावनाओं, धारणा, विचारों, विचारों और मन की गतिविधियों के संबंध में लगन से सावधान रहें। • मन में संतुलन, लाता है।
सही एकाग्रता (सम्मासमाधि / सम्यक् समाधि)	• सही प्रयास + सही दिमागीपन = सही एकाग्रता। • ध्यान की दुनिया में एकाग्रता स्थापित करने के लिए साँसलेने की विधि का ध्यान। • एकाग्र मन की ओर ले जाता है और आत्मज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।
बुद्ध ने एक मध्यम मार्ग/मध्यम मार्ग निर्धारित किया और लोगों से सुख या दुख के किसी भी चरम से बचने के लिए कहा।	

1. एक व्यक्ति, केवल जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने पर ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है।
2. त्रिरत्न (बौद्ध धर्म के तीन रत्न)
   - जागृत मन की 3 अभिव्यक्तियाँ- बुद्ध, धर्म और संघ।

बौद्ध पथ का आवश्यक तत्व और तीन रत्न कहलाते हैं।

शंकरा

- उनका जन्म कलाड़ी गाँव (केरल) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और वे गोविंदपाद के शिष्य थे।
- उनकी बौद्धिक श्रेष्ठता के लिए, उन्हें भारतीय विचारकों में सबसे महान दार्शनिक के रूप में जाना जाता है।

उनके दर्शन के तत्व

- अद्वैत वेदाँत - ब्रह्म ही एकमात्र वास्तविकता है और दुनिया माया की रचना है।
- ब्रह्म - ब्रह्म (शुद्ध चेतना) सभी गुणों और सभी श्रेणियों की बुद्धि से रहित है। यह बिल्कुल अनिश्चित, अद्वैत और वाणी और मन से परे है। जिस क्षण हम इस ब्रह्म को बुद्धि की श्रेणियों में लाने का प्रयास करते हैं, यह बिना शर्त चेतना नहीं रहती, बल्कि बद्ध हो जाती है। माया द्वारा प्रतिबिम्बित या बद्ध, इस ब्रह्म को ईश्वर कहा जाता है।
- ईश्वर-ईश्वर ही अस्तित्व, चेतना, आनंद है। वह पूर्ण व्यक्तित्व, माया के भगवान और इस ब्रह्मांड के निर्माता, पालनकर्ता और संहारक हैं। वे भक्ति के पात्र और नैतिक जीवन के प्रेरक हैं।
- व्यक्तिगत स्व - स्वयं ब्रह्म से अलग नहीं है। अज्ञानता के कारण व्यक्ति को द्वैत की झूठी धारणा होती है जो स्वयं की वास्तविक प्रकृति की प्राप्ति में एक बड़ी बाधा है। जब कोई श्रुति द्वारा जागृत होता है, तो उसे पता चलता है कि वह शरीर, इंद्रियाँ या मन नहीं है, बल्कि अद्वैत सार्वभौमिक स्व है।
- बंधन - मनुष्य की बंधन और पीड़ा की स्थिति अज्ञानता के कारण है। अज्ञान के कारण, आत्मा भूल से अपने को स्थूल और सूक्ष्म शरीर से जोड़ लेती है। इस स्थिति में, यह भूल जाता है कि यह वास्तव में ब्रह्म है, और अपने आप को एक सीमित शरीर और मन के साथ पहचानता है जो स्वयं को ('अहंकार' या 'मैं') के रूप में अवधारणा की ओर ले जाता है।
- मुक्ति - मुक्ति ब्रह्म के साथ एकता की स्थिति है जो और कुछ नहीं, बल्कि केवल अपने स्वयं के सत्य की प्राप्ति है। यह वास्तव में दुख की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि सकारात्मक आनंद की स्थिति है। शंकर ने मुक्ति की तुलना गले पर हार की खोज से की, जो वहाँ अपने अस्तित्व को भूल गया और इधर-उधर खोजा।
- तत्त्वम् असि - आत्मा और ईश्वर (अयोग्य अद्वैतवाद) के बीच एक अयोग्य पहचान है। वस्तुओं और वस्तुओं, विषय और वस्तु, स्वयं और ईश्वर के बीच सभी भेद माया की मायावी रचना हैं।
- ज्ञान - ज्ञानयोग (ज्ञान प्राप्ति) से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कर्म और उपासना केवल उत्प्रेरक हैं जो हमें वास्तविकता को जानने और हमें तैयार करने का आग्रह करते हैं
- उस ज्ञान के लिए हमारे मन को शुद्ध करके लेकिन, अंततः यह ज्ञान ही है जो हमें मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

निष्कर्ष

- शंकर के अनुसार, अज्ञान बंधन का मूल कारण है।
- शंकर कहते हैं कि जिस प्रकार प्रकाश अंधकार का विरोधी है और प्रकाश ही अंधकार को दूर कर सकता है, उसी प्रकार केवल ज्ञान ही अज्ञान को नष्ट कर सकता है। शंकर के अनुसार वेदाँत का अध्ययन मनुष्य को अज्ञानता को पूरी तरह से नष्ट करने में मदद करता है।
- उनका आगे तर्क है, गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है, इस प्रकार जो मुक्ति की इच्छा रखता है, उसे पहले एक ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए जिसने ब्रह्म को महसूस किया हो।

चार्वाक

दर्शन- लोकायत

स्रोत- बृहस्पति

सूत्र प्रकृति- नास्तिक हिंदू परंपरा

विशेषताएँ

1. यह लोका पर आधारित है जिसका अर्थ है वास्तविक भौतिक संसार और आयत जो राय के लिए खड़ा है
2. यह भौतिकवाद का समर्थन करता है, क्योंकि भौतिकवादी अनुभव वास्तविक होते हैं और इंद्रियों द्वारा महसूस किए जाते हैं। मनुष्य का कामुक सुख केवल सांसारिक चीजों की धारणा पर निर्भर करता है।
3. चार्वाक दर्शन हिंदू धर्म के नास्तिक विचारधारा से संबंधित है और यह मोक्ष के विचार को खारिज करता है। चार्वाक ने किसी भी अलौकिक अस्तित्व पर विश्वास नहीं किया और स्वीकार नहीं किया।
4. ज्ञान के संदर्भ में, चार्वाक अनुमान आधारित ज्ञान को खारिज करते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि चूँकि ज्ञान अनुमानों पर आधारित है जो स्वाभाविक रूप से संदेह का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरण के लिए, अनुमान आधारित ज्ञान कहता है कि यदि धुआँ है तो आग अवश्य होगी। चार्वाक ने धुएँ पर संदेह जताया और तर्क दिया कि ऐसे कई तरीके हैं जिनसे धुआँ

उठ सकता है और फैल सकता है क्योंकि तापमान में अंतर के कारण सर्दियों में मुँह से धुआँ निकलता है। इसलिए उन्होंने संशयवाद का समर्थन किया।

5. ज्ञान के बारे में संदेह चार्वाक दर्शन का अनिवार्य हिस्सा है।
6. चार्वाक भी बौद्ध धर्म और जैन धर्म की तरह वैदिक विरोधी थे, लेकिन बुद्ध और महावीर ने भौतिकवाद के विचार पर चार्वाक को खारिज कर दिया।
7. पश्चिमी दर्शन में, लोकायत दर्शन की तरह एपिकुरियन-इस्म काफी समान है। दोनों दर्शन दर्द पर सुख को बढ़ावा देते हैं। चार्वाक ने तर्क दिया कि किसी को सुख का विरोध नहीं करना चाहिए, बल्कि आनंद के पीछे रहना चाहिए और जितना हो सके दर्द से बचने का प्रयास करना चाहिए। चार्वाक अभी भी अत्यधिक आनंद के बारे में सतर्क थे क्योंकि इससे समस्याग्रस्त मानसिक स्थिति पैदा होगी।
8. कामुक सुख को प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि इन्द्रियों का उपयोग यहाँ किया जाता है अस्वीकार करने के लिए नहीं।

धारणा बनाम अनुमान

- चार्वाक के अनुसार धारणा ही ज्ञान है। इसमें दो तह होते हैं यानी भीतरी और बाहरी।
- जबकि आंतरिक धारणा मन और उसके संज्ञानात्मक कार्य के बारे में है,
- बाहरी अनुभूति पाँच इंद्रियों, सांसारिक चीजों और प्रकृति का अनुभव है।
- चार्वाक के लिए, अनुमान केवल आधारित अवलोकन हैं और वे कुछ हद तक उपयोगी हैं लेकिन वे त्रुटि के लिए प्रवण हैं। चार्वाक कहते हैं कि निष्कर्ष तभी पूर्ण और वैध ज्ञान का साधन हो सकता है जब कोई सभी अवलोकनों, सभी परिसरों और प्रत्येक स्थिति को जानता हो।
- आखिर चार्वाक ने किस बात को नकारा ?
    1. बाद का जीवन
    2. संसार
    3. कर्म का दर्शन
    4. धार्मिक संस्कार और परंपरा
    5. पुनर्जन्म
    6. बौद्ध और जैन धर्म व्यायाम संयम पर ध्यान दें

आलोचना और मूल्यांकन

- चार्वाक का भौतिकवाद का प्रचार उपभोक्तावाद से जुड़ा हुआ है।
- यह लंबे समय तक संघर्ष और पर्यावरण में असंतुलन का कारण बनता है।
- अध्यात्म मानसिक समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता है जबकि चार्वाक केवल कामुक आनंद की बात करता है।
- चार्वाक का संशयवाद अच्छा है क्योंकि यह जिज्ञासु मन को विकसित करने में मदद करता है।
- सभी वैज्ञानिक खोजों में संदेह की बात है। कोई भी ज्ञान स्थायी और मान्य नहीं है जब तक कि हमारे पास सभी अवलोकन न हों, चार्वाक के दर्शन का मूल विचार मानव सुख के नए साधनों का पता लगाना और दर्द से बचना था। बड़े पैमाने पर समाज कल्याण की उम्मीद करते हैं और भौतिक सुख भी खुशी का एक अनिवार्य हिस्सा है।
- चार्वाक पूछने, प्रश्न करने और आनंद की इच्छा के माध्यम से सांसारिक समस्याओं के लिए सांसारिक समाधान खोजने में मदद करता है।

तिरुवल्लुर

- थिरुक्कुरल लिखा जो राजनीतिक शासन, ज्ञान और प्रेम/सेक्स पर केंद्रित था।
- थिरुक्कुरल में राजा और राज्य के बारे में कई अवधारणाएँ दीं जिन्हें राज्य, सरकार आदि जैसे राजनीति विज्ञान की समकालीन अवधारणाओं से जोड़ा जा सकता है।
- राजा के गुण- साहस, उदार हाथ, बुद्धि और ऊर्जा, ज्ञान, मजबूत निर्णय लेना।